मारक-ए-कर्बला की शख़्सियतों का इन्तेख़ाब

ख़तीबे इन्केलाब मौलाना सै० हसन ज़फ़र नक़वी, कराची
हिन्दी रूप: डॉ० आरिफ़ अब्बास

कर्बला का वाक़िआ मुहर्रम 61[हि०] में रुनुमा हुआ। आज सदियाँ गुज़रने के बावजूद भी सानेह—ए—कर्बला के बेशुमार पहलू सामने आ चुके हैं और तहक़ीक़ का हर बाब चन्द नये अबवाब के खुलने का सबब बन रहा है। ये भी हक़ीक़त है कि एतेराज़ करने वालों और शक करने वालों के एतेराज़ात और शुकूको शुब्हात का न ख़त्म होने वाला सिलसिला भी अब तक जारी है। मगर ये भी एक तारीख़ी सच्चाई है कि तारीख़े बशरियत में कोई वाक़िआ ऐसा नहीं जिस पर वाक़िअ—ए—कर्बला से ज़्यादा तालीफ़ो तसनीफ़ का काम हुआ हो। और कोई शख़्सियत ऐसी नहीं जिस पर जनाब सैय्यदुश्शोहदा और उनके अन्सार से ज़्यादा लिखा गया हो। चाहे नस्र का मैदान हो या नज़्म का किसी एक शख़्सियत और एक वाक़िए पर इतना तारीख़ी और अदबी मवाद मौजूद नहीं जितना वाक़िअ—ए—कर्बला और इमाम हुसैन पर मौजूद है।

हर दौर में इतिहासकार और मुहक़्क़ीन सानेह—ए—कर्बला के नये—नये पहलू सामने लाए हैं और लाते रहेंगे। और इसी तरह एतेराज़ करने वालों के एतेराज़ात का सिलसिला भी बन्द होने वाला नहीं।

एक एतेराज़ जो बराबर किया जाता है वह ये है कि अगर जनाब सैय्यदुश्शोहदा[अ०] के इल्म में ये बात थी कि वह कर्बला में शहीद कर दिये जाएंगे तो फिर वह अपने साथ ख़ानदान वालों ख़ास तौर पर ख़वातीन और बच्चों को क्यों लेकर आए थे? हम मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अपने मुख़्तलिफ़ मक़ालात में इस सवाल का जवाब तफ़सील से देते हैं। यहाँ तफ़सील में जाने का वक़्त नहीं। मगर मुख़्तसर अर्ज़ किए देते हैं कि जनाब सैय्यदुश्शोहदा[अ०] ने पूरी हिक्मते अमली के साथ कर्बला के लिए शख़्सियात का इन्तेख़ाब किया था। अगर आपने जनाब मुहम्मद हनफ़िया को और जनाब अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़रे तैयार को मदीने में रह जाने का हुक्म दिया था तो उसमें भी मुस्तक़िल लाएहा—ए—अमल पोशीदा था और अगर दूध पीते बच्चे अली असग़र[अ०] और जनाब सकीना जैसे कमसिन बच्चों को साथ लाए थे तो उसमें भी हिक्मते इमामत कारफ़रमा नज़र आती है क्योंकि अगर ये बच्चे और औरतों साथ न होतीं, ये वाक़िआ सिर्फ़ एक जंग के तौर पर सामने आता। लेकिन बच्चों और ख़वातीन पर होने वाले मज़ालिम ने यज़ीदियत की फ़िक्र को पूरी तरह आशकार कर दिया और आज तक दरबारी इतिहासकार और वाक़िआ निगार भी इस बाब में यज़ीद और उसके कारिन्दों की सफ़ाई पेश करने से क़ासिर हैं।

इस ज़िम्न में हम एक और मुख़्तसर दलील पेश कर सकते हैं कि उन एतेराज़ करने वालों को इस तरफ़ भी सोचना चाहिए कि आख़िर क्या वजह है कि इमाम हुसैन[अ०] जब से मक्का से इराक़ की तरफ़ चले थे मुसलसल अपने साथ आने वालों को पेश आने वाले हालात से आगाह कर रहे थे और उन्हें वापस जाने का मश्वरा दे रहे थे। लेकिन कर्बला पहुँचने से पहले ज़ुहैर बिन क़ैन को अपनी नुसरत की दावत दी, कर्बला पहुँच कर जनाब हबीब इब्ने मज़ाहिर को ख़त लिख कर बुलाया और शबे आशूर हुर के लिए अपना दरवाज़ा खुला रखा।

बहरहाल जैसा कि मैंने शुरु में अर्ज़ किया कि इन मसाएल पर मैं मुख़्तलिफ़ मक़ालात में तफ़सीलन ज़िक्र कर चुका हूँ। अब हम आते हैं एक और पहलू से कर्बला में मौजूद एक और शख़्सियत पर गुफ़्तुगू

करने की सआदत हासिल करते हैं। और उस आफ़ाक़ी हस्ती का ज़िक्र करने से पहले इन्तेहाई इज्ज़ो इन्केसारी के साथ अपनी बेबिज़ाअती का इज़हार करते हैं। क्योंकि ये शख़्सियत वाक़िअ–ए–कर्बला में जनाब सैय्यदुश्शोहदा[अ०] के बाद एक मरकज़ी किरदार की हामिल है। यानी अलमदारे हुसैन, फ़ातेहे फ़ुरात और सक़्क़ाए हरम जनाब अब्बास[अ०] इब्ने अली[अ०]।

जब भी जहाँ भी जनाब अब्बास[अ०] का ज़िक्र आता है तो सबसे पहले जो तसव्वुर आता है वह एक इन्तिहाई जज़्बाती जल्द गुस्से में आ जाने वाले और शुजाअत तो बहरहाल ज़िक्र ही क्या। ख़ास तौर पर मजालिस और महाफ़िल में मवद्दत के तक़ाज़ों के पेशे नज़र बाज़ औक़ात ऐसा बयान भी सामने आ जाता है जिस से नादान दोस्ती का इज़हार भी होने लगता है। मौक़ा मिला तो इसकी मिसाल आने वाली लाइनों में पेश कर देंगे।

जैसा कि जनाब अब्बास[अ०] की हयाते तैय्यबा के बारे में एक वाक़िआ बराबर नक़्ल किया जाता है और इस वाक़िए की सच्चाई पर आज तक किसी ने ज़बाने एतेराज़ नहीं खोली। वह आपकी विलादते बा सआदत का ज़िक्र है जिसमें मौलाए मुत्तक़ियान अली[अ०] इब्ने अबी तालिब[अ०] के जनाब फ़ातिमा कल्लाबिया यानी उम्मुल बनीन से अक़्द की तफ़सील है। तो ये बात तो तै है कि जनाब अब्बास[अ०] अपने दूसरे भाईयों में एक मुमताज़ मक़ाम के हामिल हैं और दूध पीने के ज़माने ही से आपकी वालिद–ए–माजिदा जनाब उम्मुल बनीन ने आपकी तरबियत पर ख़ास तवज्जो दी और मुसलसल आपको वाक़िअ–ए–कर्बला के लिए तैयार करती रहीं। और ये बात पूरी तरह कमसिन अब्बास[अ०] के दिलो दिमाग़ में बिठा दी कि वह औलादे फ़ातिमा[स०] के अदना से ख़िदमतगुज़ार हैं।

दूसरी तरफ़ अली[अ०] जैसा बाबा अब्बास[अ०] की तालीमो तरबियत के फ़राएज़ अन्जाम दे रहा है। इस बात की वज़ाहत की ज़रूरत नहीं कि मौलाए काएनात[अ०] ने अपने बेटे अब्बास[अ०] को सिर्फ़ फ़ुनूने हर्ब ही नहीं सिखाए थे बल्कि बाबे मदीनतुल इल्म से बराहे रास्त कस्बे फ़ैज़ करने वाले अब्बास[अ०] की इल्मी शख़्सियत भी इस बात की आइनादार थी कि आप आग़ोशे अली[अ०] से फ़ैज़याफ़्ता हैं। अब ज़ाहिर है कि आग़ोशे हैदर के पले अब्बास[अ०] इस बात से किसी भी दूसरे फ़र्द से ज़्यादा आगाह हैं कि मक़ामे इमाम क्या है? जनाब अब्बास[अ०] जानते हैं कि जनाब हसनैन[अ०] और जनाब ज़ैनाबे कुबरा[स०] और जनाब उम्मे कुल्सूम[स०] औलादे फ़ातिमा[स०] हैं जिनका एहतेराम ख़ुद मौलाए काएनात[अ०] करते हैं जबकि ख़ुद जनाब अब्बास[अ०] उस माँ के बेटे हैं जो अपने आप को कनीज़े ज़हरा[स०] कहलाना पसन्द करती है। अब भला हम ये बात कैसे मान लें कि कर्बला में जब लश्करे उमरे साद के सिपाही ख़्यामे हुसैनी को फ़ुरात के साहिल से हटाने के लिए आगे बढ़े और जनाब अब्बास[अ०] ने अपनी शमशीर से एक ख़त खींच दिया था और किसी को उस ख़त से आगे नहीं बढ़ने देते थे। इसके बाद कुछ नादान दोस्त जोशे ख़िताबत में एक नाजायज़ इज़ाफ़ा कर देते हैं कि जब जनाब सैय्यदुश्शोहदा[अ०] ने जनाब अब्बास[अ०] को ख़ेमे हटाने का हुक्म दिया तो आपने ये हुक्म मानने से इन्कार कर दिया और इमाम हुसैन[अ०] को ख़ेमें में ये पैग़ाम भिजवाना पड़ा कि ज़ैनब "शेर को जलाल आ गया है उसे जंग करने से रोको" उस पर जनाब ज़ैनब[स०] ने जनाबे फ़िज़्ज़ा[अ०] के ज़रिए पैग़ाम भिजवाया कि "अब्बास[अ०] तलवार न्याम में रख लो वरना ज़ैनब[स०] ख़ेमे से बाहर आ जाएगी"।

जैसा कि मैंने अर्ज़ किया कि ऊपर लिखे इज़ाफ़ी जुमले सिर्फ़ चन्द लोग ही अदा करते हैं बाक़ी ज़िम्मेदार ज़ाकिरीन और ख़तीब हर क़दम पर एहतियात से काम लेते हैं। अब आप ख़ुद ही ग़ौर कीजिये एक तरफ़ हम जनाब अब्बास[अ०] को अमली ज़िन्दगी में हुसैन[अ०] का गुलाम पाते हैं, आपकी ज़ियारत में आपको अब्दे सालेह, मौला का इताअत गुज़ार और जाँनिसार जानते हैं दूसरी तरफ़ आपकी शख़्सियत को एक ऐसे गुस्सावर शख़्स की तरह पेश करते हैं कि नऊज़बिल्लाह जब उसे गुस्सा आ जाए तो वह अपने इमाम का हुक्म भी नज़र अन्दाज़ कर देता है। मआज़ल्लाह

बस इसी को हमने नादान दोस्ती का नाम दिया है। हमें समझ लेना चाहिए कि अगर कर्बला में जनाब अब्बास[अ॰] का किरदार न होता तो क़यामत तक न तो वफ़ा का मफ़हूम समझ में आता न ही इताअते इमाम की हक़ीक़त मालूम होती और न ही अलमदारी की अहमियत उजागर होती। कर्बला में ख़्वातीन में जनाब ज़ैनब[स॰] और मर्दों में जनाब अब्बास[अ॰] का किरदार सबसे जुदा है। आपने अलमदारी के लक़ब को मेराज अता कर दी आपने कर्बला में ये भी सिखाया कि अलम उठाना कमाल नहीं है बल्कि उसे बचाने की ख़ातिर बाज़ू कटवा देना कमाल है। वाक़िअ–ए–कर्बला से मन्सूब जितनी भी निशानियाँ हैं मसलन गहवारा, ताबूत, ज़ुलजनाह और ख़ास तौर पर ये सब निशानियाँ अपने अन्दर शुजाअत की दास्तानें लिए हुए हैं। हज़रत अब्बास[अ॰] के अलम की शबीह उठाने वाला बहुत सोच समझ कर ये अलम उठाए ये कोई रसमी कारवाई नहीं है बल्कि ये अलम उठाना इस बात का एलान है कि दीन के परचम की सरबलन्दी के लिए जब तक बाज़ू सलामत हैं और जिस्म में ताक़त है यज़ीदियत के मुक़ाबले में डटे रहना है।

ख़ुदा नख़्वास्ता, ख़ुदा नख़्वास्ता ऐसा न हो कि जब आज़माईश का मैदान आए तो.....

बक़िया... जेहादे मुख़्तार

एक महफ़ूज़ जाय पनाह तक पहुँचा कर चले गए।

अन्त में मुसअब पुत्र ज़ुबैर ने सम्भवत: अपने बड़े भाई अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर के कहने पर ही एक बहुत बड़ा लशकर लेकर कूफ़े पर आक्रमण कर दिया मुख़्तार ने मुक़ाबले की तैयारी की मगर मशीयते इलाही का फ़ैसला कुछ और था मुख़्तार अपने मक़सदे हयात को पूरा कर चुके थे इनकी ताक़त भी इस समय एकत्र न थीं क्योंकि इब्राहीम पुत्र मालिके अशतर नसीबैन में थे और इस सूरत में इन्हें कोई ख़बर न थी मुसअब के पास फ़ौज बहुत ज़्यादा थी और मुहम्मद पुत्र अशीश रुअसाए कूफ़ा साथ थे इसलिए ख़ुद कूफ़े के बहुत से लोग जो दबे थे वह भी उसका साथ देने खड़े हो गए नीज़ मुख़्तार के ख़िलाफ़ एक गिरोही सवाल अरब और ग़ैर अरब का उठा दिया गया था और यह कहकर कि मुख़्तार ने अजमियों को अरबियों पर मुसल्लत कर दिया।

तमाम अरबों को मुख़्तार के ख़िलाफ़ भड़काया गया ताहम मुख़्तार ने अपने पास के लशकर के साथ कई दिन बड़ी बहादुरी के साथ मुसअब से जंग की जिसके दौरान इनके साथ के कई प्रसिद्ध सरदार जैसे हमर पुत्र शमीत और अब्दुल्लाह पुत्र कामिल आदि शहीद हुए इस जंग में विरोधी फ़ौज में से एक आदमी जो दुश्मनाने अहलेबैत में प्रसिद्ध था यानी मुहम्मद पुत्र अशीश मारा गया।

अन्ततः मुख़्तार के तमाम बावफ़ा साथी शहीद जंग मुन्तसिर और वह ख़ुद क़िले के भीतर घिर गए फिर कुछ बहादुरों के साथ निकल कर उन्होंने आख़िरी बार बढ़ी जवाँमर्दी के साथ जंग की और मारक–ए–जंग में 14 रमज़ान 67 हिजरी को 67 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया।

अदावत और क़सावत की हद यह थी कि उसके बाद उनकी बीवी अमरह पुत्री बिन्ते नोमान पुत्र बशीर अन्सारी को भी जिन्होंने मुख़्तार को बुरा कहने से इनकार कर दिया था मजम–ए–आम में क़त्ल कर दिया गया यक़ीनन ख़ुशक़िस्मत है वह इन्सान जो मशीयत के किसी मक़सद की पूर्ति का साधन बने मुख़्तार[र॰अ॰] उन ही ख़ुश क़िस्मत लोगों में से थे इनकी ज़ात के साथ क़ुदरत ने अपना एक अमली निज़ाम वाबस्ता किया था और इस निज़ाम को पूरा होने के साथ इनकी ज़िन्दगी भी ख़त्म हो गई अब वह ख़त्म नहीं हो गई बल्कि जावेदानी तौर पर बाक़ी है।

हरगिज़ नमीरद आँ कि दिलश ज़िन्दा शुद बइश्क़
सब्त अस्त बर जरीद–ए–आलम दवामे मा